Book-Post

65

To,

*If not delivered*
*please return to :*

**EDITOR,**
**THE VEDIC PATH,**
P.O. Gurukul Kangri,
(U.P.) 249404.

कलामे रुके कूटकों कोठो रकवनाइ ॥ अंकमकलिषकर कमल कहि कोविद कविराइ ॥४३॥ ऊरध अधे है अय है समघर
लिषे वनाई ॥ याही विधि फिर फिर लिषे समहै मदन वढाइ ॥४४॥ जितौ मत्त को कीजिये आदि गे दुगणा लेहु ॥ मेरु अंत
के सदन मे इकु इकु अंक धरे हु ॥४५॥ वरणाकु लिकं ॥ दोय दर तरे घर आदि निहारो एक अंक ते ठोर सवारो फिर इकइक
तजइ कइ क धारो तजे सम ऊर्ध युगल तहि डारो ॥४६॥ दोहा ॥ अन्य गेह फिर अंक है वांई तरफ लठोर । सब लै तां फिर
अंक तज तो सम दछिणा ओर ॥४७॥ लेऊ लगा लों ओर के अलिषे शून्य घर माहि । यां विधि सम ही पूरिये रचि कंस
शयना हि ॥४८॥ ऊर्ध कोणा लास दन की दछिणा घर अंक डोर । दो ऊ अंक मिलाई के लिषे शून्य घर ठोर ॥४९॥
सर्व गुरु के आदि घर पर इक इक घट ठान । अंक सर्व लघु के गिनो मत्त मेरु पहिचान ॥५०॥ वर्णा मेरु यथा ॥
वर्णा मेरु के शिषर के सम है सदन वणाइ । फिर याही विधि अध लिषे इक इक सदन चढाइ ॥५१॥ आदि
गे दुहे वर्णा सम फिर धारे तिद अंक । आदि अंत सम घर न मे इकु इकु धरे निशंक ॥५२॥ दोय दूर फिर अंक
युक सम ही सदन सु जान । आदि गेह सम गुरु समझ फिर इक इक घट मान ॥५३॥ अंत सर्व लघु जा
निये कही पंथ सु वेदाइ । वर्णा मेरु के भरण की रीति ये ही ठगराइ ॥५४॥ अथ पताका लक्षन । दोहा
कहे एक कठे मे रुमे सो है जिह जिह ठाम । जानप रैजा सों सभे वेह ध्व जा अभिराम ॥५५॥ [illegible]जा

2

बरलघुमिलैगुरकरनष्टवताइ ३० वरननष्टयथा बरननष्ट पूछै जहां रूपसमविषमकोइ समकोलघुलिषविषमगुरषहु रूप
धिकरसोइ ३१ विषमरहैइकमेलकैअर्धकरैकविबीर समकोलघुलिषविषमगुरताहीविधमतिधीर ३२ तौलौंइहविधकी
जौपैपूरनहोइस्वरूप बरननष्टकीरीतियह्हिपोकरकहौअनूप ३३ अथउद्दिष्टलछन मत्ताअथवावरनकोलिष्योरूप
लषिलेत तोह्हिकहितउद्दिष्टसमजेहैंसुमतिनिकेत ३४ मत्ताउद्दिष्टयथा जहांमत्तप्रस्तारकेलिषिकैकोऊस्वरूप पुनि
पूछैयहिकोनसोपौंकहौयेकविभूप ३५ इकद्वयधरिपुनिपूरवजुगदीजैअंककबनाइ दीहनकेअधिहूंलिषैदूयमता
केमाइ ३६ पूरनअंककमेकमकरैदीहनिसिरकेअंक पोबरहैसोरूपकहिकलउद्दिष्टनिपंक ३७ वरनउद्दिष्टयथा
नसो॰ लिषयवरनप्रस्तारकोकोऊरूपबनाइ पुनिपूछैयहिकौंपौंकहौयेकविराइ ३८ इकधरदुगनबनाइकैलिषैसमन
सिरअंक लघुअछरसिरअंककेमेजोरैएकनिशंक ३९ जेतेहोइसोरूपकहिरहुजोवजानबगेस रीतिवरनउद्दिष्टकीभा
षीमोहिमहेस ४० अथमेरलछन लषेअमुकप्रस्तारमहिसवगुररूपइतेक इकसोइकघटकेइतेसमउलेइसबिबेक
४१ जानैसमलघुरीतियह्हिकहीसंभुसुषदाइ तासोमेरुवषानीयेसमउसुमतिअगराइ ४२ मात्रामेरुयथा कला

२

रखो के अंक लिखि प्रथम एक दूय धार पूरव जुग लसम ठानी औ जितनी कसो विचार १८ पूरन अंक कते देखी ये दुतीय अंक के है जोइ तित
ने ही लघु आदि है अंत उते लघु होइ १९ पूरन अंक ते जानी ये तौ जो अंक सुजान उतने ही गुरु आदि है अंत उते गुरु मान २० काव्य
छंद छ पूर्ण अंक ते पे अंक जो त्रितीय सुहावन आदि अंत लघु ते ते विमल मति वरन सुनावन तांते जो है तृतीय अंक छगपति लखि
पावन आदि अंत गुरु उते मति सूचीसम जावन २१ वरन सूचीयथा दो अक्षर संख्या अंक लिख दूय धरि दुगन बनाइ पूर्ण
अंक ते जो लहे दुतिय अंक कविराइ २२ तिते आदि लघु रूप हैं तिते अंत लघु जान तिते आदि गुरु के समुझ तिते अंत गुरु मान २३
पूरन अंक ते पेखीए त्रितीय अंक कविभूप आदि अंत लघु के तिते ती जै सममन रूप २४ आदि अंत गुरु के तिते छगपति सुमत
नष्ट उद्दिष्ट
निधान मात्रा सूची वरन की चंद्रचूड भगवान २५ अथ नष्ट लक्षन लखे अमुक प्रस्तार के अमुक रूप है येह तांहि करत है नष्ट
सम जे को विद्रुम तिगेह २६ मात्रा नष्ट यथा जितीम ति प्रस्तार के पूछे रूप बखेस तिती मति लघु कर लिखे धोरे अंक सुदेस २७
इक दूय धरि पुनि पूरव जुग लिखी ये अंक बनाइ सभे लघु निसिर अंत को पूरन अंक कहाइ २८ पूछो अंक घटाइ ये पूर
न अंक कौ मित शेष रहो लघु सिर न पर समुझै चातुर चित्त २९ वहै मिले तो अंत मलो नातर जो रमिलाइ तिन तरे लघु

२

| | |
|---|---|
| १ | SSSS |
| २ | IISSS |
| ३ | ISISS |
| ४ | SIISS |
| ५ | IIIISS |
| ६ | ISSIS |
| ७ | SISIS |
| ८ | IIISIS |
| ९ | SSIIS |
| १० | IISIIS |
| ११ | ISIIIS |
| १२ | SIIIIS |
| १३ | IIIIIIS |
| १४ | ISSSI |
| १५ | SISSI |
| १६ | IIISSI |
| १७ | SSISI |
| १८ | IISISI |
| १९ | ISIISI |
| २० | SIIISI |
| २१ | IIIIISI |
| २२ | SSSII |
| २३ | IISSII |
| २४ | ISISII |
| २५ | SIISII |
| २६ | IIIISII |
| २७ | ISSIII |
| २८ | SISIII |
| २९ | IIISIII |
| ३० | SSIIII |
| ३१ | IISIIII |
| ३२ | ISIIIII |
| ३३ | SIIIIII |
| ३४ | IIIIIIII |

मात्रा
अगठ
ये कि
हि वि
१२ व
रे तेवा

लघु है अंत तिवर
स्तार महि आदि लघु के
ते अंत गुरु जान आदि
परम प्रबीन तां सो क

| | |
|---|---|
| १ | SSSSS |
| २ | ISSSS |
| ३ | SISSS |
| ४ | IISSS |
| ५ | SSISS |
| ६ | ISISS |
| ७ | SIISS |
| ८ | IIISS |
| ९ | SSSIS |
| १० | ISSIS |
| ११ | SISIS |
| १२ | IISIS |
| १३ | SSIIS |
| १४ | ISIIS |
| १५ | SIIIS |
| १६ | IIIIS |
| १७ | SSSSI |
| १८ | ISSSI |
| १९ | SISSI |
| २० | IISSI |
| २१ | SSISI |
| २२ | ISISI |
| २३ | SIISI |
| २४ | IIISI |
| २५ | SSSII |
| २६ | ISSII |
| २७ | SISII |
| २८ | IISII |
| २९ | SSIII |
| ३० | ISIII |
| ३१ | SIIII |
| ३२ | IIIII |

प्रस्तार यथा काव्य छंदु सब गुरु चरन बनाइ आदि गुरु तर घल घु दीजै
धिस मलि पैवचे सो बाम धरि जै गुरु धर फेर लघु लिखै रीति फिर फिर
नै सम ही लघु हैं जौं इह रीति प्रस्तार मति लीजै ११ लघु आवत हैं आदि म
धम कला जहि होइ सम में लघु आवे न ही कहि त सबै कवि लोइ
१२ प्रस्तार यथा प्रथम ही हुत रिलहु धरै आगै ऊरध समान उ व
मे लिखे गुरु ही भी पति जान १३ फेर फेर इह विध करत सम ही
न प्रस्तार की भाषी गिर जांकत १४ अथ सूची लछन इते असुक प्र
रूप अंत लघु के हैं इते इह जौनै कवि भूप १५ बहुर आदि गुरु के इते र
अंत लघु के इते पावे इह पहिचान १६ आदि अंत गुरु के इते सम सु
ची कहित हैं जे कोविद रससीन १७ मात्रा सूची यथा कल सं

ॐ श्रीगणेशाय नमः अथ प्रस्तार प्रभाकर लिख्यते प्रथम मंगलाचरन वस्तु निर्देशात्मक दो० छ्हासो हं यदि मति पुरा प्रभु महि
हुती सुहाय हरि लीनो छन्दकार तिन गो पी अंबर हार १ संवत ससि मुनि वसु महीं चैत्र कृष्न पक्ष सार उदय भयो गुरु पंचमी
प्रभाकर प्रस्तार २ अथ प्रत्यय क्रम नामानि काव्य छंद० प्रथम महि संख्या सुउबहु प्रस्तार बखानो सूची नष्ट उद्दिष्ट मेरु पु
नि धुजा पताका नहु अष्ट मर्कटी संहित गनहु अव्यक्त मन आनो कलावरन कर द्विगुन करम ये षोडश जानो ३ अथ लघु गुरु नाम
स्वरूप गणना विधि दो० सूधी रेखा लघु समझ गुरु कुंचाकार इनमें वरने छंद सम जे कवि बुद्धि उदार ४ अथ संख्या लक्षन इतीक
लागुरु वरन के हैं इते स्वरूप जो तें यहि गिनती लहै सो संख्या कविभूप ५ मात्रा संख्या यथा जिती कला के रूप बुध इक छै लघु लि
खलेहु इक के द्वै धरि पुनि इक इक अंक सवन सिर देहु ६ आवे अंक जहि अंत लह ओ परि जोइ तितने रूप वतइये यों कलसं
ख्या होइ ७ अथ मात्रा संख्या स्वरूपः

| १ | २ | ३ | ५ | ८ | १३ | २१ | ३४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| । | । | । | । | । | । | । | । |

वरन संख्या यथा जिते वरन के रूप जहि इक छै गुरु लिख
लेहु तिन सिर अंक वनाइ के दूष धरि दुगने देहु ८ अंत ही हुधरि अंक जो आवे परम सुजान उतने
रूप वताइये संख्या वरन विधान ९ पंच वरन संख्या स्वरूपः

| २ | ४ | ८ | १६ | ३२ |
|---|---|---|---|---|
| ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |

अथ
प्रस्तार लक्षन दो० जिते रूप ते प्रगट करि दीजे यह जहां दिखाइ तांहि कहित प्रस्तार सम जे कोविद कवि राइ १०